विद्या भवन, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

वर्ग -अष्टम

विषय -हिंदी

अध्ययन -सामग्री

पाठ- 5 सोना (कहानी)

-महादेवी वर्मा

बच्चों आज की कक्षा में इस कहानी के पृष्ठ संख्या 34 एवं 35 दिए जा रहे हैं और इनका सार रूप भी मैं अपने शब्दों में दे रही हूं । तो आप इसे पढ़ लें ताकि यह पाठ पूरा हो जाए और अगली कक्षा(Live class) में प्रश्नोत्तर पूरे किए जाएंगे ताकि syllabusअपनी सही रफ्तार से पूरी हो ।

घंटी बजते ही वह फिर प्रार्थना के मैदान में पहुँच जाती और उसके समाप्त होने पर छात्रावास के समान ही कक्षाओं के भीतर-बाहर चक्कर लगाना आरंभ करती।

उसे छोटे बच्चे अधिक प्रिय थे क्योंकि उनके साथ खेलने का अधिक अवकाश रहता था। वे पंक्तिबद्ध खड़े होकर सोना-सोना पुकारते और वह उनके ऊपर से छलाँग लगाकर एक ओर से दूसरी ओर कूदती रहती। वहाँ सरकस जैसा खेल कभी घंटों चलता क्योंकि खेल के घंटों में बच्चों की एक कक्षा के उपरांत दूसरी कक्षा आती रहती।

मेरे प्रति स्नेह-प्रदर्शन के कई प्रकार थे। बाहर खड़े होने पर वह सामने या पीछे से छलाँग लगाती और मेरे सिर के ऊपर से दूसरी ओर निकल जाती। प्रायः देखने वालों को भय होता था कि मेरे सिर पर चोट न लग जाए परंतु वह पैरों को इस प्रकार सिकोड़े रहती और मेरे सिर को इतनी ऊँचाई से लाँघती थी कि चोट लगने की कोई संभावना ही नहीं रहती थी।

भीतर आने पर वह मेरे पैरों से अपना शरीर रगड़ने लगती। मेरे बैठे रहने पर वह साड़ी का छोर मुँह में भर लेती और कभी पीछे चुपचाप खड़े होकर चोटी ही चबा डालती। डाँटने पर वह अपनी बड़ी गोल और चकित आँखों से ऐसी अनिर्वचनीय जिज्ञासा भरकर एकटक देखने लगती कि हँसी आ जाती।

अनेक विद्यार्थियों की भारी-भरकम गुरु जी से सोना को क्या लेना-देना था। वह तो उस दृष्टि को पहचानती थी, जिससे उसके लिए स्नेह छलकता था और उन हाथों को जानती थी जिन्होंने यत्नपूर्वक दूध की बोतल उसके मुख से लगायी थी।

यदि सोना को अपने स्नेह की अभिव्यक्ति के लिए मेरे सिर के ऊपर से कूदना आवश्यक लगेगा, तो वह कूदेगी ही। मेरी किसी अन्य परिस्थिति से प्रभावित होना, उसके लिए संभव नहीं था।

कुत्ता स्वामी और सेवक का अंतर जानता है और स्वामी के क्रोध की प्रत्येक मुद्रा से परिचित रहता है। स्नेह से बुलाने पर वह गद्‌गद होकर निकट आ जाता है और क्रोध करते ही सभीत और दयनीय बनकर दुबक जाता है। परंतु हिरन यह अंतर नहीं जानता अतः उसका पालने वाले से डरना कठिन है। यदि उस पर क्रोध किया जाए तो वह अपनी चकित आँखों में और अधिक विस्मय भरकर पालने वाले की दृष्टि से दृष्टि मिलाकर खड़ा रहेगा, मानों पूछता हो, क्या यह उचित है! वह केवल स्नेह पहचानता है जिसकी स्वीकृति बताने के लिए उसकी विशेष चेष्टाएँ हैं।

मेरी बिल्ली गोधूलि, कुत्ते हेमंत-वसंत, कुतिया फ्लोरा, सबसे पहले इस नए अतिथि को देखकर रुष्ट हुए परंतु सोना ने थोड़े ही दिनों में सबसे सख्य स्थापित कर लिया। फिर तो वह घास पर लेट जाती और कुत्ते और बिल्ली उस पर उछलते-कूदते रहते। कोई उसके कान खींचता, कोई पैर और जब वे इस खेल में तन्मय हो जाते तब वह अचानक चौकड़ी भरकर भागती और वे गिरते-पड़ते उसके पीछे दौड़ लगाते।

वर्षभर का समय बीत जाने पर सोना हरिण-शावक से हरिणी में परिवर्तित होने लगी। उसके शरीर के पीताभ रोएँ ताम्रवर्णी झलक देने लगे। टाँगे अधिक सुडौल हो गयी और खुरों के कालेपन में चमक आ गयी। ग्रीवा अधिक बंकिम और लचीली हो गयी। पीठ में भरावववाला उतार-चढ़ाव और स्निग्धता दिखाई देने लगी परंतु सबसे अधिक विशेषता तो उसकी आँखों और दृष्टि में मिलती थी। आँखों के चारों ओर खिंची कज्जलकोर में नीले गोलक और दृष्टि ऐसी लगती थी मानों नीलम के बल्बों में उजली विद्युत का स्फुरण हो।

इस बीच फ्लोरा ने भक्तिन की अँधेरी कोठरी के एकांत कोने में चार बच्चों को जन्म दिया और वह खेल के संगियों को भूलकर अपनी नवीन सृष्टि के संरक्षण में व्यस्त हो गयी। एक-दो दिन सोना अपनी सखी को खोजती रही, फिर उसको इतने छोटे जीवों से घिरा देख उसकी स्वाभाविक चकित दृष्टि गंभीर विस्मय से भर गयी।

सोना का लेखिका के प्रति प्रेम प्रदर्शन यानि अपने प्रेम को प्रकट करने के कई तरीके थे । कभी-कभी जब लेखिका बाहर खड़ी होती थी वह पीछे से सर के ऊपर से छलांग लगा देती थी । ऐसा ही लगता था कहीं लेखिका को गहरी चोट ना लग जाए लेकिन वह ऐसी होशियारी से छलांग लगाती थी कि ऐसी घटना कभी घटित नहीं हुई । जैसे हम इंसान प्रेम के भूखे होते हैं उसी प्रकार होना भी प्रेम की भूखी थी । सोना स्वभाव से इतनी मिलनसार थी कि उन्होंने लेखिका के साथ जीवन यापन कर रहे हर पशुओं से मित्रता स्थापित कर ली थी । धीरे-धीरे वह हरिण शावक से हरिणी में परिवर्तित होने लगी तो उसके शरीर में विभिन्न प्रकार के बदलाव होने लगे । शरीर के साथ-साथ उसका

आंतरिक परिवर्तन होने लगा । जब उसकी एक साथिन कुत्तिया को बच्चे पैदा हुए तो उन बच्चों के संरक्षण में उन्होंने उसने दिन-रात एक कर दिया ।।बच्चे पैदा हुए तो उन बच्चों के संरक्षण में उन्होंने उसने दिन रात एक कर दिया । हां अब आगे...

एक दिन देखा, फ्लोरा कहीं बाहर घूमने गयी है और सोना भक्तिन की कोठरी में निश्चिंत लेटी है। पिल्ले आँखे बंद रहने के कारण चीं-चीं करते हुए सोना के उदर में दूध खोज रहे थे। तब से सोना के नित्य के कार्यक्रम में पिल्लों के बीच में लेट जाना भी सम्मिलित हो गया। आश्चर्य की बात यह थी कि फ्लोरा, हेमंत, बसंत या गोधूलि को तो अपने बच्चों के पास फटकने भी नहीं देती थी परंतु सोना के संरक्षण में उन्हें छोड़कर आश्वस्त भाव से इधर-उधर घूमने चली जाती थी।

संभवतः वह सोना की स्नेही और अहिंसक प्रकृति से परिचित हो गयी थी। पिल्लों के बड़े होने पर और उनकी आँखें खुल जाने पर सोना ने उन्हें भी अपने पीछे घूमनेवाली सेना में सम्मिलित कर लिया और मानों इस वृद्धि के उपलक्ष्य में आनंदोत्सव मनाने के लिए अधिक देर तक मेरे सिर से आर-पार चौकड़ी भरती रही।

उसी वर्ष गरमियों में मेरा बद्रीनाथ की यात्रा का कार्यक्रम बना। प्रायः मैं अपने पालतू जीवों के कारण प्रवास में कम रहती हूँ। उनकी देख-रेख के लिए सेवक रहने पर भी मैं उन्हें छोड़कर आश्वस्त नहीं हो पाती। पालतू जीवों में से मैंने फ्लोरा को साथ ले जाने का निश्चय किया क्योंकि वह मेरे बिना नहीं रह सकती थी।

सोना की सहज चेतना में न मेरी यात्रा जैसी स्थिति का बोध था न प्रत्यावर्तन का, उसी से उसकी निराश जिज्ञासा और विस्मय का अनुमान मेरे लिए सहज था।

पैदल आने-जाने के निश्चय के कारण बद्रीनाथ की यात्रा में ग्रीष्मावकाश समाप्त हो गया। जुलाई में लौटकर जब मैं बँगले के द्वार पर आ खड़ी हुई तब बिछुड़े हुए पालतू जीवों में कोलाहल होने लगा।

गोधूलि मेरे कंधे पर आ बैठी। हेमंत, बसंत मेरे चारों ओर परिक्रमा करके हर्ष-ध्वनियों से मेरा स्वागत करने लगे पर मेरी दृष्टि सोना को खोजने लगी। क्यों वह अपना उल्लास व्यक्त करने के लिए मेरे सिर के ऊपर से छलाँग नहीं लगाती? सोना कहाँ? पूछने पर माली आँखें पोंछने लगा और चपरासी, चौकीदार एक-दूसरे का मुँह देखने लगे। वे लोग आने के साथ ही मुझे कोई दुखद समाचार नहीं देना चाहते थे परंतु माली की भावुकता ने बिना बोले ही उसे दे डाला।

ज्ञात हुआ कि छात्रावास के सन्नाटे और फ्लोरा के तथा मेरे अभाव के कारण सोना इतनी अस्थिर हो गयी थी कि इधर-उधर खोजती-सी वह प्रायः कंपाउंड से बाहर निकल जाती थी। इतनी बड़ी हिरनी को पालने वाले तो कम थे, परंतु उसका खाद्य और स्वाद प्राप्त करने के इच्छुक व्यक्तियों का बाहुल्य था। इसी आशंका से माली ने उसे मैदान में एक लंबी रस्सी से बाँधना आरंभ कर दिया था।

एक दिन न जाने किस स्तब्धता की स्थिति में बंधन की सीमा भूलकर वह बहुत ऊँचाई तक उछली और रस्सी के कारण मुँ के बल धरती पर आ गिरी। वही उसकी अंतिम साँस और अंतिम उछाल थी।

सब सुनहले रेशम की गठरी से शरीर को गंगा में प्रवाहित कर आये और इस प्रकार किसी निर्जन वन में जन्मी और ज संकुलता में पली सोना की करूण कथा का अंत हुआ।

सब सुनकर मैंने निश्चय किया था कि अब हिरन नहीं पालूँगी पर संयोग से फिर हिरन पालना पड़ रहा है।

—श्रीमती महादेवी व